JOHN LOCK - SOURCES OF KNOWLEDGE

जॉन लॉक - ज्ञान का स्रोत

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan
(For Part- 1 Hons. Students)

लॉक ,बेकन के समान दर्शन का उद्देश्य संसार में यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति मानते हैं।संसार की यथार्थ ज्ञान प्राप्ति के पूर्व हमें ज्ञान के स्रोत 'बुद्धि' पर विचार करना अनिवार्य है। तात्पर्य यह है कि सर्वप्रथम हमें यह देखना चाहिए कि हमारी बुद्धि किन-किन विषयों को जान सकती है तथा किन-किन विषयों को नहीं जान सकती, अर्थात बुद्धि की क्षमता या योग्यता की जांच होनी चाहिए। इसी कारण लॉक मानव बुद्धि की परीक्षा से प्रारंभ करते हैं। लॉक इसके महत्व को बतलाते हुए स्वयं कहते हैं कि बुद्धि मीमांसा अत्यंत उपयोगी है। मनुष्य बौद्धिक प्राणी है, बुद्धि हीअन्य प्राणियों के अपेक्षा मानव की विशेषता है। जिस प्रकार हम आंखों से सब कुछ देखते हैं पर आंखों को नहीं देखते उसी प्रकार हम बुद्धि से सब कुछ जानते हैं पर बुद्धि को नहीं जानते। इसे जानने के लिए कला और कष्ट की आवश्यकता होती है जिससे बुद्धि स्वयं अपनी परीक्षा का विषय बन सके।

ज्ञान को परिभाषित करते हुए लॉक ने कहा है कि "ज्ञान का अर्थ प्रत्ययों के बीच संगति अथवा असंगति की प्रत्यक्षानुभूति है।"(Knowledge consists in Perception of the connection and agreement or, disagreement and repugnancy of our ideas)।संगति और असंगति के से तात्पर्य बुद्धि में उपस्थित प्रत्ययों और बाह्य वस्तुओं के बीच संगति और असंगति से है। लॉक का कहना है कि हमारी बुद्धि में आदिरूप(Archetype) प्रत्यय हैं। किसी ज्ञान की प्रामाणिकता इन आदिरूप प्रत्ययों के संगति में है अर्थात कोई भी ज्ञान तब प्रमाणिक होगा जब आदिरूप प्रत्ययों के अनुकूल होगा।उदाहरण के तौर पर यदि हम कहते हैं कि तीन भुजाओंवाला त्रिभुज है तो यहां हमारे प्रत्यय और वस्तुनिष्ठ त्रिभुज में संगति है और यदि हम यह कहते हैं कि चार भुजाओं वाला त्रिभुज है तो यहां हमारे मन में उपस्थित प्रत्यय और वस्तुनिष्ठता में असंगति है क्योंकि चार भुजाओं वाला चतुर्भुज होता है ना कि त्रिभुज। इसी प्रकार बहादुर कायर का विचार भी और अयथार्थ ही है। "यदि प्रत्ययों के बीच संगति है तो ज्ञान यथार्थ है और यदि उनके बीच असंगति है तो ज्ञान और अयथार्थ है"(Knowledge is the perception of the agreement or disagreement of two ideas, Knowledge then seems to me to be nothing but the perception of the connection and agreement or disagreement)।ज्ञान की सत्यता और असत्यता संगति और असंगति की मात्रा पर निर्भर करता है। संगति जितनी अधिक होगी ज्ञान उतना ही यथार्थ एवं सत्य होगा और ठीक

इसी प्रकार असंगति जितनी अधिक होगी ज्ञान उतना ही अयथार्थ होगा।अतः हमारा ज्ञान प्रत्ययों या विज्ञानों की संगति तथा असंगति से बना है। पर सवाल उठता है कि विज्ञान क्या है? जब हमारी इंद्रियों का वस्तु के मूल गुणों से संपर्क होता है तब यह मूल गुण संवेदना द्वारा हमारी आत्मा पर अपना प्रतिबिंब छोड़ते हैं और यह प्रतिबिंब ही विज्ञान या प्रत्यय कहलाते हैं।यह विज्ञान दो प्रकार के होते हैं - सरल और मिश्र। सरल प्रत्यय वह जिन की प्राप्ति हमें संवेदना,

स्वसंवेदना अथवा दोनों से होता है। मिश्र प्रत्यय हमें सरल प्रत्यय की योग से प्राप्त होते हैं। सरल प्रत्यय की प्राप्ति के समय मन पूर्णतः निष्क्रिय रहता है परंतु सरल प्रत्ययों को जोड़कर ज्ञान का रूप देते समय मन सक्रिय होता है। मन की यह सक्रियता प्रत्ययों के मिश्रण में ही देखने को मिलती है,प्रत्ययों के उत्पत्ति में नहीं।क्योंकि लॉक का मानना है कि हमारी इंद्रियां मात्र प्रत्ययों की प्राप्ति के साधन है वे स्वयं निर्माण नहीं कर सकती। इस प्रकार प्रत्ययों का मन की क्रियाओं से जुड़ना ही ज्ञान है।

लॉक के अनुसार ज्ञान के दो स्रोत हैं -संवेदन और स्वसंवेदन।

संवेदन - संवेदन शब्द का प्रयोग कई अर्थों में किया है कभी तो इंद्री-दत्तों के रूप में उसका प्रयोग किया गया है जैसे रूप, रंग, शब्द, स्पर्श इत्यादि। कभी इस शब्द का प्रयोग संवेद्य गुणों जैसे - पीला, सफेद, गर्म, ठंडा, मुलायम इत्यादि के लिए किया गया है। संवेदना को परिभाषित करते हुए लॉक ने कहा है कि, "संवेदना शरीर के किसी भाग में उत्पन्न हुई गति या संस्कार है जो बुद्धि में कुछ प्रत्यक्ष उत्पन्न करता है।संवेदना की उत्पत्ति की प्रक्रिया कुछ इस प्रकार है - बाह्य वस्तुओं का इंद्रियों पर आघात होता है। इंद्रियां इस घटना की सूचना मस्तिष्क को देती हैं। मस्तिष्क इस सूचना से मन को प्रभावित करता है फलस्वरुप मन में एक विज्ञान की उत्पत्ति होती है। मन में इस प्रकार का विज्ञान उत्पन्न होने की प्रक्रिया को ही संवेदना कहते हैं "। आत्मा में संवेदना और विज्ञान समकालीन उत्पन्न होते हैं। यही संवेदना हमारे अधिकांश विज्ञानों का स्रोत है।

स्वसंवेदन - स्वसंवेदन अनुभव का दूसरा रस्रोत है। स्वसंवेदन, संवेदन द्वारा प्राप्त विज्ञानों पर किए गए मन के व्यापारों का प्रत्यक्षीकरण है। ज्यों ही आत्मा को संवेदन द्वारा विज्ञान प्राप्त होते हैं वह इन पर प्रत्यक्षीकरण, चिंतन, संदेह, विश्वास, तर्कणा, जानना संकल्प करना इत्यादि व्यापार करने लगती है। जब आत्मा इन व्यापारों पर चिंतन या आत्म लोचन करती है उसे कुछ स्पष्ट विज्ञान प्राप्त होने लगते हैं जिन्हें स्वसंवेदन कहा जाता है। संवेदन हमें बाह्य इंद्रियों द्वारा प्राप्त होते हैं पर स्वसंवेदन हमें आंतरिक इंद्रियों द्वारा प्राप्त होते हैं। स्वसंवेदन के विज्ञानों को लॉक प्रतिवर्त विज्ञान नाम देते हैं। स्वसंवेदन के विज्ञान उतने ही मौलिक और प्राथमिक हैं जितने संवेदन के विज्ञान होते हैं। उनमें अंतर केवल इतना ही है कि जब तक आत्मा को पहले संवेदन के विज्ञान प्राप्त नहीं हो जाएंगे तब तक न तो आत्मा का उन पर कोई व्यापार होगा और ना ही स्वसंवेदन के विज्ञान उत्पन्न हो सकेंगे। इस प्रकार काल

दृष्टि से संवेदन के विज्ञान पहले आते हैं और स्वसंवेदन के विज्ञान बाद में। अन्य बातों में कोई विशेष अंतर नहीं पाया जाता है।

संवेदन और स्वसंवेदन ही ऐसे दो द्वार हैं जिनके द्वारा विज्ञानरूपी प्रकाश आत्मारुपी अंधेरी कोठरी में प्रवेश करता है। किंतु ये दोनों द्वार एक साथ नहीं खुलते एक दूसरे के बाद खुलते हैं। इनमें से संवेदन प्रथम और प्रधान है। स्वसंवेदन बाद में आता है और सदा संवेदन का अपेक्षा रखता है।